B.A. (Part-I) EXAMINATION, 2018

हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न-पत्र–(कहानी एवं उपन्यास)

Time Allowed : Three Hours Maximum Marks : 100

1. निम्नलिखित गद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) "नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर की मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ।" 10

अथवा

गनी छड़ी के सहारे चलता हुआ किसी तरह मलबे के पास पहुँच गया। मलबे में अब मिट्टी-ही-मिट्टी थी जिसमें से जहाँ-तहाँ टूटी और जली हुई ईंटें बाहर झाँक रही थीं। लोहे और लकड़ी का सामान उसमें से कब निकाला जा चुका था। केवल एक जले हुए दरवाजे का चौखट न जाने कैसे बचा रह गया था। पीछे की तरफ दो जली हुई अलमारियाँ थीं जिनकी कालिख पर अब सफेदी की हलकी-हलकी तह उभर आई थी। उस मलबे को पास से देखकर गनी ने कहा, "यह बाकी रह गया है, यह?" और उसके घुटने जैसे जवाब दे गए और वह वहीं जले हुए चौखट को पकड़कर बैठ गया। क्षण-भर बाद उसका सिर भी चौखट से जा सटा और उसके मुँह से बिलखने की-सी आवाज निकली, "हाय ओए चिरागदीना!" 10

(ख) कुछ स्मृतियाँ, कुछ स्वप्न, कुछ अस्फुट शब्द, श्रमरत छात्र की तरह सुषमा बार-बार उन पृष्ठों को उलटकर दोहराती है। उन संवेगों की दहलीज पर खड़ी होकर अतीत में झाँकती है, मन की संकुल गलियों में भटका करती है-हर वाक्य हर मुद्रा और प्रत्येक स्पर्श के अनेकों संदेशों पर रूकती हुई, ठहरती हुई । और उस समय इस संसार की सीमाएँ दूर-दूर हटती जाती हैं और वह अकेली रह जाती है-अपने में संपृक्त। 10

अथवा

अपने मन को समझाकर, दुनिया की आँखों से छिपाकर जिस सत्य को बहुत दबा-ढककर रखा था, मौसी उसे अप्रयोजन ही उभार रही थी; और उस बात की अधिक चर्चा करने से अम्माँ नाराज़ हो जाएँगी, ऐसे अवसरों पर अम्माँ प्राय: दोष सुषमा के ही सिर डालकर बरी हो जाती थीं-अब मैं क्या करूँ ? सयानी लड़की है, कोई बच्चा तो है नहीं जो समझाने-बुझाने से मान जाएगी। वह शादी करने को राजी ही नहीं होती तो मैं क्या करूँ ? और मुहल्ले-पड़ोसवाले उनकी बात मान जाते। 10

(ग) "सुषमा के दिल पर जिस वस्तु ने हल्की-सी खरोंच डाली वह उसका यौवन था। नीरु की उन आँखों में न जाने कितने स्वप्न जाग रहे थे। जीवन की दहलीज़ पर खड़ी हुई वह अपने आगे बिखरी हुई रंगीन झिलमिलाती हुई रोशनी देख रही थी। उस क्षण सबसे घिरी बैठी सुषमा जैसे अकेली हो आई-यह नील-उसने आँखे फैलाकर नील को देखा, नील का प्रशस्त माथा, सुषमा की ओर देखते हुए उसकी दृष्टि की

कोमलता, सोफे पर हल्के से टिके हाथ, यह सब सुषमा की दृष्टि को असह्य हो उठे। उसकी धुँधली हो आई दृष्टि में अपने ये प्रियजन तीन काले धब्बे बनकर रह गए। सुषमा के विचार फिर उस बंद गली में मुड़ गए जिससे निकलने की कोई राह न थी।" 10

अथवा

जब से यह बवंडर उठ खड़ा हुआ था, तब से उसने नील में एक बहुत बड़ा परिवर्तन देखा। वह जैसे सुषमा से कितना बड़ा हो गया था और सुषमा ने हार-थककर अपना बोझ उस पर डाल दिया था। नील उससे बता करता तो ऐसे स्वर में कि सुषमा एक आहत शिशु है। उसने अपनी इच्छाओं को सुषमा की मन:स्थिति के अनुसार ढाल लिया था। कभी-कभी पूरी शाम वे दोनों चुपचाप बैठे काट देते। सुषमा रह-रहकर सिसक उठती और वह मौन बैठा उसके बालों को सहलाता रहता। 10

(घ) ऊपर उठते ही बम्बई आँखों से ओझल हो गई और हमारा जहाज समुद्र पर उड़ने लगा। नीचे देखने को भी क्या था सिर्फ नीला समर। कहीं-कहीं बादल के टुकड़े दिखाई देते हैं। गर्मी कुछ कम हुई। कुर्सी टेढ़ी की और आँखें मूँदकर लेट गया। लगा, दूर नीचे कहीं मेरा छोटा सा घर है और मेरे दोनों बच्चे खेल रहे हैं प्रार्थना की, भगवान, जा तो रहा हूँ, लौटकर अपने इन हृदय के टुकड़ों को सकुशल देखूँ। 10

अथवा

आकाश में रंग-बिरंगे फूलों की घटाओं के समान उड़ते हुए और वीणा, वंशी, मुरज, जलतरंग आदि का वृन्दवादन (ऑरकैस्ट्रा) बजाते हुए पक्षी कितने सुन्दर जान पड़ते हैं। मनुष्यने बन्दूक उठाई, निशाना साधा और कई गाते-उड़ते पक्षी धरती पर ढेले के समान आ गिरे। किसी की लाल-पीली चोंचवाली गर्दन टूट गई है, किसी के पीले सुन्दर पंजे टेढ़े हो गए हैं और किसी के इन्द्रधनुषी पंख बिखर गए हैं। क्षत-विक्षत रक्तस्नात उन मृत-अर्धमृत लघु गीतों में न अब संगीत है; न सौन्दर्य, परन्तु तब भी मारने वाला अपनी सफलता पर नाच उठता है। 10

2. 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में उषा प्रियंवदा ने आधुनिक जीवन की ऊब, छटपटाहट, संत्रास और अकेलेपन की स्थिति को अनुभूति के स्तर पर पहचाना और व्यक्त किया है। इस आधार पर उपन्यास में वर्णित विचारों का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास की नायिका सुषमा का चरित्र-चित्रण कीजिए। 15

3. कहानी के तत्त्वों के आधार पर जैनेन्द्र कुमार की 'पाजेब' कहानी की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'सजा' कहानी की मूल संवेदना को स्पष्ट करते हुए आशा का चरित्र-चित्रण कीजिए। 15

4. *'ठेले पर हिमालय' यात्रावृत का सार अपने शब्दों में लिखिए।*

अथवा

'बसन्त के अग्रदूत' शीर्षक संस्मरण में निराला जी की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया गया है। स्पष्ट कीजिए। 15

5. उपन्यास की परिभाषा देते हुए, उपन्यास के प्रमुख तत्त्वों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

कहानी और उपन्यास का अन्तर बताते हुए, कहानी के प्रकार बताइये। 15